महामानव चौ. शिवनाथ सिंह शांडिल्य

शिक्षा और समाजसेवा के लिए समर्पित रहे बाबूजी, लोगों के दिलों में आज भी ताजा हैं उनकी यादें

केवी कॉलेज: उन्नति की ओर अग्रसर

पश्चिमी उ.प्र. के प्रमुख जनपद मेरठ में शहर से 20 किलोमीटर दूर के.वी. डिग्री कॉलिज माछरा के नाम से एक कालेज की स्थापना सन् 1955 में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. चौ. शिवनाथ सिंह शाण्डिल्य ने की थी। वर्ष 2003 में उन्हीं के नाम पर इस महाविद्यालय का नाम चौ. शिवनाथ सिंह शांडिल्य (पी.जी.) कॉलिज कर दिया गया, जो आज एक फलदार वृक्ष का रूप धारण कर अपने संस्थापक के सपनों को साकार कर रहा है। यह महाविद्यालय 20 एकड़ के विस्तृत भू-भाग में फैला है। यहां चार संकायों- शिक्षा, कला, विज्ञान एवं कृषि के विभिन्न विषयों में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध स्तर तक की अध्ययन सुविधा उपलब्ध है। गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध कराने की अपनी प्रतिबद्धता के साथ-साथ समाज के सभी वर्गों को उच्च शिक्षा मुहैया कराना महाविद्यालय की प्राथमिकता है।

अनुशासन मानव जीवन का आभूषण है। विद्यार्थी जीवन के लिए तो यह नितांत आवश्यक है। विद्यार्थी जीवन का परम लक्ष्य विद्या प्राप्ति है और विद्या प्राप्ति के लिए अनुशासन एवं समर्पण मुख्य मंत्र है। अनुशासन न केवल व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक है, अपितु राष्ट्रीय जीवन का आधार भी है। जिस अनुशासन का मानव जीवन में सामान्य रूप से और विद्यार्थी जीवन में विशेष रूप से इतना महत्व है, उस शब्द का अभिप्राय है-देश, समाज, संस्था, माता-पिता, गुरुजनों तथा बड़े अधिकारियों की आज्ञा का पालन करना और नियमों, विधानों एवं कानूनों का पालन करना। अनुशासन की भावना ही स्वतंत्रता का मूल्य है। वैश्वीकरण के युग में मूल्य आधारित शिक्षा और ज्ञान समाज के निर्माण के लक्ष्यों को महाविद्यालय अपने सीमित संसाधनों के बेहतर प्रयोग द्वारा प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध है। महाविद्यालय शिक्षक एवं विद्यार्थियों के हितों के प्रति पूरी तरह से जागरूक है।

विवि का अग्रणी महाविद्यालय

महाविद्यालय में 'राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज' का अध्ययन केन्द्र भी दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत विभिन्न पाठयक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित कर रहा है। अन्तरमहाविद्यालय स्तर पर महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं न केवल प्रतिभागी की भूमिका निभा रहे हैं बल्कि विभिन्न प्रतियोगिताओं में पदक जीतकर महाविद्यालय का नाम विश्वविद्यालय स्तर पर अग्रणी महाविद्यालयों में सम्मिलित कराने में सफल रहे हैं। महाविद्यालय का छात्रावास दूर-दराज के क्षेत्रों व अन्य प्रदेशों के छात्रों के लिए रहने की सुविधा उपलब्ध करा रहा है। सीमित संसाधनों के बावजूद कुशल प्रशासन, क्रमबद्ध संगठन तथा दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर महाविद्यालय समाज के सभी वर्गों को उच्च कोटि की गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान कराने का कार्य अपनी सम्पूर्ण प्रतिबद्धतता एवं निष्ठा से सफलतापूर्वक कर रहा है और यह आवश्यक भी है क्योंकि समस्त मानव जाति का कल्याण समाज के सभी वर्गों के समान रूप से उत्थान में ही निहित है। भविष्य की कठिन चुनौतियाँ महाविद्यालय के दृढ़ संकल्प को और मजबूत करेंगी, ऐसा विश्वास है।

महाविद्यालय में स्थापित हविभिन्न समितियां

- महिला उत्पीड़न निवारण समिति
- मेधावी छात्र मण्डल
- पुस्तकालय समिति
- अनुशासन समिति
- पत्रिका समिति
- छात्र समस्या निवारण समिति
- अनु. जाति/जनजाति समिति
- शिक्षक कल्याण कोष
- पिछड़ा वर्ग छात्र समस्या निवारण समिति
- अल्पसंख्यक छात्र समस्या निवारण समिति।

बाबूजी की प्रतिमा का अनावरण

चौ. प्रेमनाथ सिंह केवी इंटर कालेज, माछरा में कालेज संस्थापक शिवनाथ सिंह शांडिल्य की सुंदर प्रतिमा स्थापित है। इस प्रतिमा का अनावरण गत वर्ष प्रदेश के गन्ना मंत्री चौधरी लक्ष्मीनारायण सिंह ने यहां आयोजित भव्य समारोह में किया था।

इस मौके पर उन्होंने चौ. शिवनाथ सिंह शांडिल्य को पूरे समाज के लिए एक आदर्श बताया। उनका कहना था कि चौ. शिवनाथ सिंह शांडिल्य ने इस ग्रामीण क्षेत्र में इतनी बड़ी संस्था की स्थापना करके जो कार्य किया है, उसे इस क्षेत्र की जनता कभी नहीं भुला सकती। यहां कालेज की स्थापना करके उन्होंने पूरे समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया है। इस समाज को हमेशा ऐसे लोगों की जरूरत रहती है, जो अपने लिए कम अपने समाज के लिए ज्यादा जीते हैं।

चौ लक्ष्मी नारायण सिंह ने इस संस्था के संचालन के लिए प्रबंधक डा. अशोक त्यागी, प्रधानाचार्य राजेश त्यागी सहित समूचे प्रबंध तंत्र को बधाई दी। प्रधानाचार्य राजेश त्यागी ने विद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक की संपूर्ण प्रगति के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यहां आसपास के बच्चे ही नहीं पढ़ते हैं बल्कि दूर-दराज के राज्यों के बच्चे भी यहां शिक्षा ग्रहण करके जाते हैं जो अपने देश ही नहीं विदेशों में भी इस संस्था का नाम रोशन कर रहे हैं।,

इस मौके पर पूर्व विधायक सत्यवीर त्यागी, कॉलेज प्रबंधक अशोक त्यागी, प्रधानाचार्य राजेश त्यागी, पूर्व एमएलसी जगत सिंह, अमित त्यागी, संजीव त्यागी, नीरज त्यागी, किशोर त्यागी, संजय त्यागी आदि भी मौजूद रहे।

30वीं पुण्यतिथि पर शत्-शत् नमन

श्रद्धेय चौधरी शिवनाथ सिंह शांडिल्य
(18 जुलाई 1897- 30 अप्रैल 1994)

नरेश उपाध्याय

शिक्षा और समाजसेवा के क्षेत्र में श्रद्धेय चौधरी शिवनाथ सिंह शांडिल्य का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। केवी कालेज माछरा के रूप में उन्होंने जो पौधा 1942 में लगाया था, आज वह वटवृक्ष बनकर पूरे देश ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी अपनी छाया बिखेर रहा है। मंगलवार को उनकी 30वीं पुण्यतिथि मनाई गई। आज बाबूजी को हमसे बिछड़े हुए भले ही 30 साल हो गए हों, लेकिन उनकी यादें हमारे दिलों में आज भी ताजा हैं।

चौधरी शिवनाथ सिंह शांडिल्य के जीवन का जो भी अध्याय खोला जाये वही निराशा में आशा और अंधेरे में प्रकाश भर देता है। अपने जीवन की तमाम उपलब्धियों के बावजूद वह ऐसे जिए, जैसे अपना कुछ है ही नहीं। शिवनाथ सिंह शांडिल्य का जन्म श्रावण कृष्ण पंचमी संवत 1954 (18 जुलाई सन 1897) को माछरा गांव में एक प्रतिष्ठित त्यागी परिवार में हुआ था। उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू फारसी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। शिक्षण काल से ही वह साहित्यिक कार्यों में रुचि लेने लगे। उसी समय मेरठ से हिन्दी मासिक पत्रिका 'ललिता' प्रकाशित हुई। तभी से वह हिन्दी प्रेमियों के संपर्क में आ गए। 1919 में बाबू जी ने माछरा में ज्ञान प्रकाशन मंदिर की स्थापना करायी, जिसने महाकवि अकबर की कई पुस्तकें प्रकाशित कीं। केवी कालेज, माछरा के संस्थापक चौ. शिवनाथ सिंह शांडिल्य का शिक्षा और समाजसेवा के क्षेत्र में दिया गया योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। वर्ष 1942 में उन्होंने माछरा में एक छोटे से स्कूल की शुरूआत की। यह स्कूल पहले जूनियर हाईस्कूल, हाईस्कूल, इंटरमीडिएट और फिर डिग्री कालेज बना। आज यहां पोस्ट ग्रेजुएट तक की शिक्षा दी जा रही है।

उर्दू शायरी के प्रेमी

चौधरी शिवनाथ सिंह शांडिल्य को उर्दू शायरी से बहुत प्रेम था। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं। अपनी पुस्तक इल्मे मजलिसी में उन्होंने उर्दू के अनेक शायरों की नीति एवं शिक्षा संबंधी नज्मों का संग्रह किया।

दर्जनों पुस्तकें लिखीं

बाबूजी को साहित्य से बड़ा लगाव था। उन्होंने दर्जनों पुस्तकें व कहानियां लिखीं। उनकी कहानियां व लेख उस समय के समाचार पत्र और पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। लेखन के अलावा उन्होंने बड़ी संख्या में पुस्तकों का संग्रह भी किया। अपना अलग पुस्तकालय विकसित किया। 30 कहानी पुस्तकें भी लिखीं, जिनमें से 24 प्रकाशित हुईं। उनकी कहानियों में हास्य, व्यंग्य के साथ शिक्षा का भी समावेश रहा।

समाजसेवी बाबूजी

बाबूजी का समाजसेवा के क्षेत्र में भी अमूल्य योगदान रहा। एक संपन्न परिवार में जन्म लेने के बावजूद उनका लगाव गरीबों से ज्यादा था। उनके दुख-दर्द बांटना, हर खुशी-गम में शामिल होना और समय-समय पर उनकी हर संभव मदद करना वे अपना धर्म समझते थे। कृषक परिवार से होने के कारण उन्होंने खेती भी की।

राजनीति में सक्रिय भागीदारी

चौ.शिवनाथ सिंह शांडिल्य ने राजनीति में भी सक्रिय भागीदारी निभायी। 16 साल तक जिला परिषद के सदस्य, 30 साल तक प्रोढ़ शिक्षा समिति मेरठ के प्रधान रहे। 'त्यागी' नामक मासिक पत्रिका के कई साल तक संपादक रहने के साथ-साथ कई अन्य पदों पर भी रहे।

देहावसान

30 अप्रैल 1994 को मेरठ में उन्होंने अंतिम सांस ली। अचानक स्वास्थ्य खराब होने पर एक दिन पहले ही वह मेरठ चले गये थे। अगले दिन उनका पार्थिव शरीर माछरा में उनकी बैठक पर लाया गया। जहां बड़ी संख्या में लोगों ने उनके अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि दी। दोपहर के समय डिग्री कालेज के परिसर में ही उनका अंतिम संस्कार किया गया। सैकड़ों लोगों ने नम आंखों से उन्हें अंतिम विदाई दी। आज भले ही चौधरी शिवनाथ सिंह शांडिल्य हमारे बीच में न हों लेकिन उनकी यादें हमारे दिलों में आज भी ताजा हैं। माछरा और आसपास के ग्रामीण उनका योगदान कभी नहीं भुला सकते।

कालेज से लगाव

बाबूजी को कालेज से बहुत लगाव था। जीवन के अंतिम दिनों में भी वह प्रतिदिन कालेज जाते थे। छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों की समस्याएं सुनना और उन्हें दूर करना उनकी आदत में शुमार था। शायद ही कोई दिन ऐसा जाता होगा, जिस दिन वह कालेज न जाते हों। बच्चों को लाइब्रेरी से पुस्तकें दिलाना, उनकी फीस माफ कराना उनकी दिनचर्या में शामिल था।

सादा जीवन उच्च विचार

बाबूजी ने हमेशा सादा जीवन उच्च विचार वाला जीवन जिया। जीवन के अंतिम पड़ाव में करीब सौ साल की आयु में भी वह शहर की चकाचौंध से दूर गांव में ही रहे। बाबूजी की बैठक के नाम से प्रसिद्ध हवेली में उन्होंने जीवन यापन किया। चकाचौंध वाले युग में भी उन्होंने कभी बिजली की जरूरत महसूस नहीं की। लालटेन के सहारे रोशनी की कमी दूर की। उनका पहनावा बिल्कुल साधारण। सफेद कुर्ता, ऊंचा पायजामा और टोपी उनकी खास पहचान रही।

1942 में कराई थी माछरा कॉलेज की स्थापना

चौधरी शिवनाथ सिंह शांडिल्य पी.जी कॉलिज, माछरा

चौधरी प्रेमनाथ सिंह के.वी. इंटर कॉलिज, माछरा

गांव माछरा वैसे तो शुरू से ही विकसित और समृद्ध रहा है लेकिन आधुनिक माछरा के विकास की शुरूआत चौधरी शिवनाथ सिंह शांडिल्य के समय में हुई। यदि उन्हें आधुनिक माछरा का संस्थापक कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। सबसे पहले उन्होंने 1942 में केवी स्कूल माछरा की स्थापना कराई। यहीं से शुरू हुई माछरा की विकास यात्रा, जो आज भी निरंतर जारी है। उस समय स्कूल में कड़ियों की छत के सिर्फ तीन पक्के व छह छप्पर वाले कमरे थे।

दिसंबर, 1942 में इस स्कूल को आठवीं कक्षा की और 1944 में हाईस्कूल की मान्यता मिली। 1946 में जब हाई स्कूल का परीक्षाफल शत प्रतिशत रहा तो 1948 में इस स्कूल को इंटरमीडिएट की मान्यता मिल गई। इसके बाद उन्होंने इस विद्यालय को डिग्री कालिज बनवाने की ठान ली। इसके लिए 1948 में आगरा विश्वविद्यालय के कुलपति को प्रार्थना पत्र भेजा गया। आगरा विवि की कार्यकारणी ने डिग्री कालेज के लिए अपनी मंजूरी दे दी। कालेज के लिए बाबूजी ने अपनी कृषि भूमि दी। जुलाई, 1955 में के.वी. डिग्री कालेज बन गया। धीरे-धीरे इसमें विज्ञान संकाय, कला संकाय, कृषि व बीएड की कक्षाएं शुरू हो गईं। चौधरी शिवनाथ सिंह शांडिल्य, चौधरी प्रेमनाथ सिंह व डा. अशोक त्यागी ने कालेज को आगे बढ़ाया। 1994 में कालेज के सचिव डा. अशोक त्यागी ने कला संकाय व कृषि विषयों में स्नातकोत्तर कराया। डिग्री कालेज माछरा में क्षेत्रीय युवकों के साथ-साथ जम्मू-कश्मीर, मणिपुर, बिहार, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब आदि राज्यों से विद्यार्थी भी शिक्षा ग्रहण करने आने लगे।

कालेज में एन.सी.सी., नेहरू युवा केंद्र और वर्ष 2004 से मर्चेन्ट नेवी के प्रशिक्षण केंद्र की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई। आज माछरा कालेज का मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ में विशेष स्थान है। शिक्षा व अनुशासन की बात करें तो प्राचार्य डा. श्रीराम त्यागी से लेकर आज डा. सतीश शर्मा और राजेश त्यागी तक किसी ने भी कोई समझौता नहीं किया। इसी साल इंटर कालेज के प्रधानाचार्य राजेश त्यागी को राज्य शिक्षक पुरस्कार के लिए चुना गया है।

श्रद्धांजलि

बाबूजी की पुण्यतिथि पर कॉलेज में हवन-यज्ञ

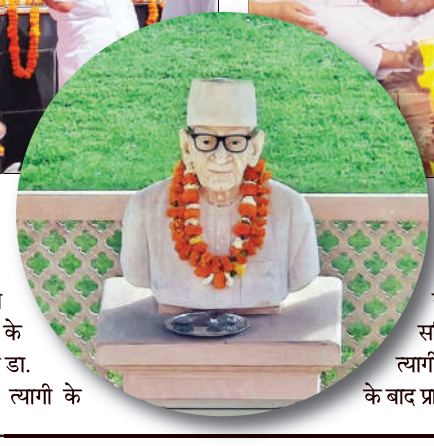

माछरा। चौ. शिवनाथ सिंह शांडिल्य (पी.जी.) कॉलेज माछरा में मंगलवार को कालेज के संस्थापक चौधरी शिवनाथ सिंह शांडिल्य (बाबूजी) की पुण्यतिथि मनायी गयी। इस अवसर पर कालेज परिसर में स्थित बाबूजी की समाधि पर यज्ञ किया गया। जिसमें मुख्य यजमान बाबू जी के प्रपौत्र व डा. अशोक त्यागी के सुपुत्र कालेज प्रबंध समिति के सचिव अमित त्यागी रहे। यज्ञ के बाद प्राचार्य, सभी शिक्षकों, कर्मचारियों तथा अन्य अतिथिगणों ने बाबूजी की समाधि पर पुष्पांजली अर्पित की। सभी के बाबूजी के कार्यों को सराहा। कार्यक्रम में मुख्य व गरिमामयी उपस्थिति पूर्वमंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार भूषण त्यागी जी की रही।

मेरे दादाजी श्रद्धेय चौधरी शिवनाथ सिंह शांडिल्य और सभी क्षेत्रवासियों ने मिलकर केवी कालेज, माछरा की स्थापना कराई। मेरे बाबाजी चौ. प्रेमनाथ सिंह, पापाजी डा. अशोक त्यागी और सभी क्षेत्रवासियों ने इस संस्था को आगे बढ़ाया है। आज दादाजी चौ.शिवनाथ सिंह जी की पुण्यतिथि पर उन्हें शत-शत नमन।
अमित त्यागी, प्रबंधक/सचिव, केवी इंटर एवं पीजी कालेज, माछरा

श्रद्धेय चौ. शिवनाथ सिंह जी ने पूरे क्षेत्र में शिक्षा और समाजसेवा की मिसाल कायम की। उन्होंने छुआछूत मिटाई। समाज को एक संदेश देने के लिए वह दलित व निम्न वर्ग के लोगों से भोजन बनवाकर खाते थे, उनसे मालिश कराते थे। समाज उन्हें हमेशा याद रखेगा। ऐसी महान आत्मा को कोटि-कोटि नमन।
डा. सतीश शर्मा, प्राचार्य, सीएसएसएस पीजी कालेज, माछरा, मेरठ

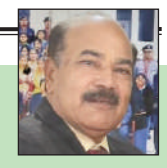

चौ. शिवनाथ सिंह शांडिल्य जी पउप्र के मालवीय थे। इस समाज की आने वाली पीढ़ियां भी उनका ऋण नहीं उतार पाएंगी। शिक्षा और समाजसेवा के क्षेत्र में उन्होंने इस समाज को जो कुछ दिया है, उसका वर्णन शब्दों में किया ही नहीं जा सकता। पुण्यतिथि पर उन्हें शत-शत नमन।
राजेश त्यागी, प्रधानाचार्य चौ. प्रेमनाथ सिंह, केवी इंटर कालेज, माछरा